राज्यपाल सचिवालय
राजभवन,जयपुर

—

वेदों को घर–घर की आवाज बनाये

– राज्यपाल

कुलाधिपति ने महर्षि दयानन्द सरस्वती शोध पीठ के लिए मौके पर राशि उपलब्ध करवाई

जयपुर, 1 अगस्त। कुलाधिपति एवं राज्यपाल कल्याण सिंह ने कहा है कि ''वेद न केवल भारतवर्ष की बल्कि विश्व संस्कृति का आधार हैं। वेद पर विश्व मे शोध हो रहे हैं।'' उन्होंने कहा कि ''वेदों में जो भाष्य लिखे गये हैं वे आमजन के लिए बोधगम्य नहीं हैं। यह विश्वविद्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती शोध पीठ के माध्यम से वेदों के सार को, उनके मूल तत्व को ऐसी सीधी, सरल एवं आमजन की भाषा में तैयार करें जिससे वेद घर–घर की आवाज बन सके।''

राज्यपाल श्री सिंह मंगलवार को अजमेर के महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के आठवें दीक्षान्त समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने छात्र–छात्राओं को उपाधियाँ एवं स्वर्ण पदक प्रदान किये।

राज्यपाल श्री सिंह ने कहा कि ''वेदों को जन–जन तक सरल भाषा में पहुँचाने के लिए विश्वविद्यालय यदि सफल रहा तो यह स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को सच्ची श्रद्वांजलि होगी और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के ''गो टु वेदाज'' के नारे को साकार रूप देने में सच्ची पहल होगी।'' श्री सिंह ने कहा कि ''मैं आज इस विश्वविद्यालय को एक दायित्व सौंपना चाहता हूँ। यह विश्वविद्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की निर्वाण भूमि पर स्थापित है। विश्वविद्यालय का नाम भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम पर है। विश्वविद्यालय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम पर शोध पीठ की स्थापना भी हो गई है। गो टु वेदाज का नारा केवल 19वीं सदी के लिए ही प्रासांगिक नहीं था, बल्कि इसकी उपादेयता आज 21वीं सदी में भी उतनी ही है। यह सार्वकालिक ज्ञान, विज्ञान एवं आध्यात्म की कुंजी है।'' श्री सिंह ने मौके पर ही महर्षि दयानन्द सरस्वती शोध पीठ के लिए 1 करोड़ रूपये की राशि का चैक विश्वविद्यालय के कुलपति श्री भगीरथ सिंह को सौंपा।

श्री सिंह ने युवा पीढ़ी को जीवन की सफलता का सूत्र बताया। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच के साथ लक्ष्य निर्धारित रखे और संसाधनों का समुचित उपयोग करते हुए सही समय पर सही निर्णय ले तो जीवन में सफलता ही सफलता मिलेगी। उन्होंने स्वावलम्बन और सहयोग को मानव जीवन की सफलता की कुंजी बताया है।

राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चरित्र निर्माण है। चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा जरूरी हैं। शिक्षा ही मानवीय गुणों का आभास करवाती है। युवाओं में गुणों को आत्मसात करवाने में शिक्षकों की महती भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि शिक्षा प्रणाली में समय के अनुकूल नवीनता का प्रयोग होना आवश्यक है। विद्यार्थियों को समझने में तथा शिक्षकों को समझाने में हो रही कठिनाइयों के युक्ति–युक्त सरलीकरण को ही कक्षा में नवाचार प्रयोग की संज्ञा से जाना जाता है। श्री सिंह ने नवाचार सीखना और सिखाना जरूरी बताया।

श्री सिंह ने कहा कि "शिक्षा एक सांचा है, जिसमें समग्र जीवन को ढ़ाला जा सकता है। सांचा जैसा होता है, उसी प्रकार के पात्र उसमें ढ़लकर निकलते हैं। अर्थात् हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिससे सकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों का निर्माण हो सके। विश्वविद्यालय की मर्यादा एवं गरिमा को बनाये रखने का दायित्व हम सभी पर है। परिसरों में संसाधनों के लिए सरकार हरसंभव प्रयासरत है। देश की गुरू गौरव गाथा को अदम्य उत्साह के साथ युवा पीढ़ी आगे बढ़ाये।"

समारोह में उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी, राज्य मंत्री श्री वासुदेव देवनानी व श्रीमती अनिता भदेल, संसदीय सचिव श्री सुरेश रावत तथा नोबेल पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी सहित अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद थे। प्रारम्भ में कुलपति श्री भगीरथ सिंह ने विश्वविद्यालय का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर राज्यपाल को स्मारिका की प्रति भी भेंट की गई। राज्यपाल ने विश्वविद्यालय परिसर में पौधा रोपा।

———

डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा
जनसम्पर्क अधिकारी, राज्यपाल